चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में अभिव्यक्त आतंकवाद

शोधार्थी
कु० ममता
कन्या गुरुकुल परिसर
ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

चन्द्रकान्ता हिन्दी की शक्ति सम्पन्न लेखिकाओं में से एक है, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने स्त्री लेखन की बनी-बनाई रुढ़ियों पर चलने के बजाय अपनी प्रतिभा से उन्हें तोड़, अपना सोचने जीने का एक अलग रास्ता बनाया। और उसी रास्ते पर चलकर अपनी अलग पहचान बनाई। धरती के स्वर्ग कश्मीर में जन्मी लेखिका 'चन्द्रकान्ता' जिन्होंने कश्मीर पर तो बेजोड़ साहित्य रचा ही है, उसके अलावा उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय ऐतिहासिक व भौगोलिक परिदृश्यों के साथ-साथ वर्तमान समय की सच्चाई को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने की चेष्टा की है।

समकालीन महिला लेखन में चन्द्रकान्ता का विशिष्ट योगदान रहा है, विशेष रुप में लेखिका द्वारा अपनी जन्मभूमि कश्मीर पर रचित रचनाऐं जिनमें इन्होंने अपने जीवन के अनुभव व ऑखों देखे दृश्य जो भी उन्हें प्राप्त हुए उसे उन्होंने बेबाक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इनकी रचनाओं से हमें विषय विविधता व कश्मीर के प्रति चिन्ता स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

चन्द्रकान्ता के तीन प्रमुख उपन्यास 'ऐलान गली जिन्दा है' 'यहॉ वितस्ता बहती है' और 'कथा सतीसर' तीनों कश्मीर की पृष्ठभूमि पर रचे गये हैं और तीनों कश्मीर पर रचित उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं को विभिन्न संदर्भों में रेखांकित किया है।

चन्द्रकान्ता ने अपने इन उपन्यासों के माध्यम से धरती के स्वर्ग कश्मीर को नर्क बनने तक तथा साम्प्रदायिकता से उत्पन्न अलगाववाद व अलगाववाद से आतंक की धरती बनने की कथा प्रस्तुत की है। लेखिका ने अपने उपन्यास कथा सतीसर के माध्यम से आतंकवाद का दंश झेल रही कश्मीरी भूमि व कश्मीरी समाज का वर्णन प्रस्तुत किया है। कथा सतीसर में वर्णित घटनाऐं आतंकवाद के स्वरुप को लोगों के सामने रखती हैं।

कथा सतीसर में सन् १९३१ से लेकर सन् २००० तक का इतिहास प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के माध्यम से कश्मीर के इतिहास में मुख्य रुप से अलगाववाद, आतंकवाद व कश्मीर में होने वाले हमलों तथा उनका अलगाववाद भयावह परिणाम जो आज तक कश्मीरी जन भुगत रहा है का उल्लेख प्रस्तुत किया गया है।

चन्द्रकान्ता कश्मीर में आतंकवाद की पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता प्राप्ति के इतिहास से मानती है। तभी से कश्मीर में विवाद व आतंकवाद की शुरुआत हो चुकी थी। वैसे तो कश्मीर में शुरुआत से ही आतंक व उथल पुथल का दौर रहा था चाहे वह सतीसर में जलोद्भव का उत्पन्न होकर वादी के लोगों को त्रस्त करना हो या सिकन्दर या अफगानों द्वारा वादी के लोगों को सताना हो। शुरुआत से ही वादी में आतंक का साया मंडराता ही रहा है। लेकिन उस दौर में साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक 'जैनलाबुद्दीन' बड़शाह आता है जिसने अपने पिता सिकन्दर बुतशिकन के अत्याचार के कारण वादी

से विस्थापित लोगों को ससम्मान वापस बुलाकर पद और प्रतिष्ठा दी।

लेकिन वर्तमान समय में कश्मीर में जो आतंकी दौर चल रहा है उसकी शुरुवात सन् १९४७ में स्वतंत्रता के बाद से हो गई थी। स्वतंत्रता के बाद देश का बंटवारा हुआ और धर्म के नाम पर देश को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया गया। देश की सभी देशी रियासतें स्वतंत्र हो चुकी थी। जिसके पश्चात सभी रियासतें भारत के साथ विलय कर चुकी थीं। परन्तु जम्मू और कश्मीर की रियासत की एक निर्णय न ले सकी। और अनिश्चिता के कारण अधिमिलन में देरी कर दी।जिसके फलस्वरुप कश्मीर को पड़ोसी मुल्क की धूर्तता के कारण कबाइली आक्रमण का दंश झेलना पड़ा। इस त्रासदी में कश्मीरी हिन्दुओं का बड़ी संख्या में कत्लेआम हुआ और कश्मीरी महिलाओं के साथ अत्याचार व बलात्कार जैसी घटनाएँ हुई।

इस आक्रमण के बाद कश्मीर में भाई-भाई की तरह मिलजुल कर रहने वाले हिन्दू-मुस्लिमों के बीच भेदभाव की भावना की शुरुआत होने लगी और इसके अलावा ४७ में कश्मीर के भारत से अधिमिलन होने के पश्चात जो प्रस्ताव रखे गये व कश्मीर के लिए 'शेख अब्दुल्ला' की पूरी न होने वाली मांगें व जम्मू कश्मीर को धारा ३७० के अन्तर्गत विशेष राज्य का दर्जा दिया जाना आदि कारणों से राज्य में हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रादायिक की शुरुआत हुई।

१९४७ में हुए कबाइली आक्रमण ने कश्मीर को झकझोर कर रख दिया था। महिलाओं को इस आक्रमण ने जिन्दगी भर न समाप्त होने वाला गम दिया। 'कथा सतीसर' उपन्यास की 'तुलसी' के समस्त परिवार को मौत के घाट उतार कर उसे कई दिन कबालियों ने अपने कब्जे में रखकर उसके साथ बलात्कार किया तथा कौन्वेंट स्कूल के प्रिसिंपल ने स्कूल के स्टाफ को गोदाम में छिपा कर रखा। लेकिन उन खूंखार लोगों ने वहॉ की महिला स्टाफ को वहाँ ढूंढ लिया। जैसे **'उन लोगों ने ननों की हत्या की। सती-साध्वियों का बलात्कार किया। और वहीं आकर उन्होंने प्रलय मचा दी। उनकी सफेद फ्राकें खून से लाल को गई थीं।** [१]

४७ में अधिनियिम के बाद ५१ में राज्य का अपना संविधान बना और 'शेख अब्दुल्ला' की केन्द्र सरकार से राज्य के लिए अनेक मांगें थी और उन मांगों का कोई अन्त नहीं था। उनकी मांगों में जम्मू कश्मीर प्रदेश के अलग ध्वज की मांग व मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री की उपाधि तक की मांग शामिल थी। जो पूरी की गई थी, जिसके फलस्वरुप प्रदेश में साम्प्रदायिक मतभेद बढ़ने लगे थे।जैस कथा सतीसर में अजोध्यानाथ और 'बलभद्र' आपस में 'शेख अब्दुल्ला' की नीतियों की बातें करते हुए कहते हैं कि -

" बावन के शहीद दिवस पर तो शेख साहब ने यह भी कह दिया कि राज्य में केन्द्र के हस्तक्षेप को बरदाश्त नहीं किया जायेगा तब भी नेहरु जी ने क्या किया ? इधर जमाएते इस्लामी का जोर बढ़ रहा है। आए दिन कोई न कोई हंगामा होता रहता है " [२]।

स्वतंत्रता के बाद कबाइली आक्रमण के अलावा प्रदेश अपेक्षाकृत शांत ही रहा है। कभी-कभार सत्ता परिवर्तन के कारण साम्प्रदायिक तनाव बड़े लेकिन वह बडा रुप न ले सकें।शेख साहब के जेल जाने के बाद कुछ साम्प्रदायिक घटनाऐं घटी लेकिन तत्कालीन 'प्रधानमंत्री' गुलाम मोहम्मद बक्शी ऐसे लोगों से सख्ती से पेश आए। बक्शी के बाद जितने भी प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री बने वह केन्द्र सरकार के प्रतिनिधि के तौर पर काम कर रहे थे। जिसके कारण कश्मीरी जनता के अन्दर-अन्दर ही शासन के प्रति असंतोष उत्पन्न होने लगा और कश्मीरा में धार्मिक आधार पर अनेक कट्टरपंथी पार्टियां बनने लगी जो लोगों को भड़काने का काम करती थी। आगे धीरे-धीरे यह पार्टियों लोगों को अपनी बात मनवाने के लिए हथियारों का सहारा लेकर लोगों में दहशत पैदा करने लगे जिसे कश्मीरी जनता भी एसे लोगों व उनके उनके संगठनों का पक्ष लेने लगी। चुनावों में भी यह संगठन अपने कैंडीडेटों को खड़ा करने लगे।

सादिक साहब के मुख्यमंत्री पद से हटते ही मीर कासिम ने ऐसे संगठनों को बढ़ावा दिया। और १९८७ में हुए आम चुनाव में हुई जबरदस्त धांधली से कश्मीर में साम्प्रदायिकता की आग भड़कने लगी क्योंकि इस चुनाव में एक ओर नेशनल कांफ्रेस और कांग्रेस का गठबंधन था और दूसरी ओर तेरह पाटियों का मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट था जिसमें नेशनल कान्फ्रेन्स की जीत हुई और अन्य पाटियों की हार।जिससे घाटी में लोकतंत्र के इस प्रहसन ने बहुत सारे युवकों को शस्त्र उठाने के लिए बाध्य किया। क्योंकि उनको भड़काने वाले साम्प्रदायिक लोग थे और सीमा पार से ऐसे लोग षडयंत्रों में शामिल थे। जिसे फलस्वरुप कश्मीर घाटी में साम्प्रदायिकता का लावा धधकने लगा और अलगावाद व आतंकवाद बढ़ने लगा। जैसे कथा सतीसर के माध्यम से लेखिका ने इसका उल्लेख किया है –

“ फारूख चुनाव जीत गए, लोग भड़क उठे। रिंगिग हुई है खुल्लम खुल्ला। असंतोष बढ़ता गया। यहॉ बम फटे वहॉ पुलिस पर हमला हुआ। ताक में बैठा पाकिस्तान समझ गया कि लोहा तप गया है, अब एक जबरदस्त चोट की जरुरत है।[३]

१९८७ के आम आम चुनावों के बाद वादी में दंगे फसाद बढ़ने लगे, जिससे आम कश्मीरी जन एक दूसरे के दुश्मन बन गए। इस साम्प्रदायिक आग में निशाना कश्मीरी पंडित बने। जिनका कश्मीर में रहना अब आतंकवादियों को अच्छा न लग रहा था। और धीरे-धीरे कश्मीरी पंडित आतंकियों का निशाना बनने लगे। आए दिन घाटी में दंगे-फसाद, मार-काट होने लगी। जिसके चलते घाटी में कर्फ्यू लगाये जाने लगे, जो आम कश्मीरी जन के लिए मानना जरुरी था। कभी मिलिटेन्टों के तो कभी आर्मी के कर्फ्यू लगाए जाने लगे। जो आम नागरिक आतंकवादियों की बात नहीं मानता था उसे आतंकवादियों द्वारा मौत के घाट उतार दिया जाता था। और उस पर लेबल लगा होता था, जिसमें लिखा होता था **‘कश्मीर का गद्दार।’**

कुछ समय बाद कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा घुसपैठ बढ़ने लगी, जिसमें कुछ कश्मीरी नौजवान भी थे जो पाकिस्तान से आतंकवादी ट्रेनिंग लेकर आये थे, और गतिविधियों में शामिल होकर आंतकी घटनाओं को अंजाम देने लगे,। आगे कश्मीरी नौजवानों के पास आतंकी ए०के० ४७ और कालिशनिकोव मिलने लगे और धीरे-धीरे कश्मीर घाटी में नौजवानों में जिहादी भावना अपने चरम सीमा पर पहुँच गई, जिसके कारण लोग सड़कों पर उतर आये और देश विरोधी नारे लगाने लगे। पाकिस्तान जिन्दाबाद व आये दिन पाकिस्तान के झंडे व काले झंडे फहराये जाने लगे जैसे –

“ उसने सुना था, कि १४ अगस्त को वादी में हरे झंडे फहराए गए और १५ अगस्त को काले झंडे भारत विरोधी नारे व आगजनी की घटनाएँ हुई। पुलिस फायरिंग में चार लोग मारे गये।जेहादियों ने साम्प्रदायिक जहर फैला दिया था। लोग डरे हुए थे कि कभी भी विस्फोट हो सकता है ”। [४]

आगे कश्मीर में मदरसों में दी जाने वाली साम्प्रदायिक शिक्षा और लोगों को साम्प्रदायिक आधार पर भड़काने के कारण आतंकवादियों ने पूरी वादी को दहला दिया।हिन्दू औरतों को भी मजबूरी में हरे रंग के फिरन पहनने पड़ते थे। क्योंकि अब वादी में हरा रंग मजहब के रंग का प्रतीक हो गया था और आजादी के लिए नारे, मदरसों व मस्जिदों की दीवारों पर लिखे जाने लगे थे जिससे कश्मीरी पंडितों में दहशत पैदा होने लगी और आगे मस्जिदों के लाउडस्पीकरों से भी दहशत के नारे गूंजने शुरु हो गये। उपन्यास में ‘लल्ली’ को पास की मस्जिद से आजादी का नारा सुनाई दिया जिससे लल्ली भयभीत होकर दहशत में आ गई जैसे–

“आवाजों का गूँजना अब आए दिन की बात हो गई ”। हमें क्या चाहते ‘आजादी। “निजामें मुस्तफा-जिन्दाबाद ”[५]

इन नारों से कश्मीर में साम्प्रदायिक सद्भाव समाप्त हो गया। दंगों की संख्या में बढ़ोतरी होने लगी और कश्मीरी हिन्दुओं को भारतीय जासूस समझा जाने लगा और कश्मीरी हिन्दुओं को जिहादियों द्वारा अकारण ही निशाना बनाया जाने लगा जिनका मकसद वादी से हिन्दुओं को हटाकर इस्लामी स्टेट बनाना था।

इन दंगों साम्प्रदायिक पार्टियों के नेता आग में घी डालने का काम करते थे। दिन प्रतिदिन घाटी में भड़काने वाले नारे बढ़ने लगे जिससे अल्पसंख्यक समुदाय में भय और निराशा बढ़ने लगी। आये दिन किसी की भी मौत की खबर सुनाई देती थी। जिहादी किसी को भी मौत के घाट उतार देते थे।ज्यादातर समाचार पत्र भी ऐसी गतिविधियों को बढ़ाने में हवा दे रहे थे। और ज्यादातर समाचार पत्र जेहादियों के इन नारों से भरे रहते थे। जैसे -

" निजामे मुस्तफा-लाकर रहेंगे।
भारतीय कुत्तो वापस जाओ।" [६]

आगे कश्मीर में आतंकी संगठन बढ़ने लगे। रोज नये-नये आतंकी संगठन बन रहे थे। हिजबुल मुजाहिद्दीन के साथ-साथ अल्लाह टैगर्स, जिया टाइगर्स, हिजबेउल्लाह जैसे आतंकी संगठनों ने कश्मीर घाटी में आतंक का माहौल बना दिया। जिनका लक्ष्य लोगों में दहशत पैदा करना था। इसलिए आये दिन किसी न किसी की हत्या कर सड़कों में फेंक देते थे। ताकि लोगों में दहशत बनी रहे।

आये दिन आतंकी गतिविधियों की बीच एक दिन डॉ० रुवैय्या का आतंकवादियों द्वारा अपहरण कर लिया गया। जिसमें केन्द्र सरकार को डॉ० रुवैय्या के बदले पाँच खूंखार आतंकवादियों को रिहा करना पड़ा था।आगे आतंकवादी घटनाऐं अपने चरम पर पहुँच चुकी थी जिसके कारण कश्मीर में कोई भी सुरक्षित नहीं था। जिहादी कश्मीरी महिलाओं व लड़कियों के साथ बदसलूकी व अत्याचार कर उन्हें अगवा कर ले जाने लगे और उनके साथ बलात्कार व अत्याचार कर उन्हें मरने के लिए छोड़ देते थे। कुछ लड़कियाँ तो गर्भवती हो जाती जिन्हें बाद में पूरा जीवन नर्क में काटना पड़ता था।

आये दिन घाटी में बम ब्लास्ट, सेना के काफिलों में हमला, कहीं हवाई जहाज हाईजैगिंग कहीं फिदाईन हमले तो कहीं भीड़-भाड़ वाली जगहों में हमले आदि आतंकी गतिविधियां बढ़ती ही चली गई और जो आज भी घटती आ रही हैं। आतंकियों के बंदूक के निशाने पर साधारण जनता के साथ-साथ देश की रक्षा में तैनात सुरक्षा के जवान व उच्च दर्जे के नेता व अधिकारी आदि भी हर वक्त बने रहते हैं। लेकिन आज भी कश्मीर में ऐसी हुर्रियत संस्थाऐं चल रही हैं। जो आतंकी संगठनों का खुलेआम समर्थन कर रही हैं और उनके आतंकी गतिविधियों में उनका साथ दे रहे हैं, जिससे कश्मीर में साम्प्रदायिक तनाव तो चल रहा है, साथ में कश्मीर जनों की दयनीय स्थिति हो गई है। कश्मीर को स्वर्ग से नर्क बनाने में इस आतंकी व जिहादी विचारधारा ने कोई कसर नहीं छोड़ी। यह सारी खुराफात पडोसी मुल्क पाकिस्तान की है वह खुले रुप से भारत में आतंकी गतिविधियां चला रहा है और नौजवानों को अपने देश के विरुद्ध भड़का रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. कथा सतीसर,चन्द्रकान्ता,- राजकमल प्रकाशन नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली संस्करण -२००१, २००७